© January 2026 | IJIRT | Volume 12 Issue 8 | ISSN: 2349-6002

भारत में सतत विकास और आर्थिक वृद्धि- एक अध्ययन

डॉ राम सिंह धुर्वे
सहायक प्राध्यापक (भूगोल)
शासकीय स्नातक महाविद्यालय नैनपुर, जिला- मंडला (म.प्र.) भारत

सारांश :-
सतत विकास और आर्थिक वृद्धि आज के समय की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं, जो किसी भी देश की प्रगति की दिशा और गुणवत्ता दोनों को निर्धारित करती हैं। आर्थिक वृद्धि वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से उत्पादन, आय और रोजगार में वृद्धि होती है, जबकि सतत विकास इस वृद्धि को पर्यावरणीय, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से दीर्घकालिक और संतुलित बनाता है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में तीव्र औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और तकनीकी विस्तार ने जहाँ आर्थिक प्रगति को गति दी है, वहीं पर्यावरणीय असंतुलन, जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। ऐसे में सतत विकास की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। संयुक्त राष्ट्र की 1987 की ब्रंटलैंड रिपोर्ट ने इसे परिभाषित करते हुए कहा कि ऐसा विकास आवश्यक है, जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के हितों की रक्षा करे।

भारत में तीव्र आर्थिक वृद्धि के साथ-साथ पर्यावरणीय स्थिरता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा, स्वच्छ भारत अभियान, राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन योजना और सतत विकास लक्ष्यों के माध्यम से इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में भारत विश्व के अग्रणी देशों में शामिल है और हरित अर्थव्यवस्था की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

अतः कहा जा सकता है कि आर्थिक वृद्धि और सतत विकास एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। दीर्घकालिक और समावेशी विकास तभी संभव है जब आर्थिक नीतियाँ पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय के साथ संतुलित रहें। सतत विकास ही वह मार्ग है जो वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए स्थिर, सुरक्षित और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकता है।

मुख्य शब्दः **पर्यावरण संरक्षण, औद्योगिकीकरण, सतत विकास, समावेशी विकास, आर्थिक वृद्धि, नवीकरणीय ऊर्जा।**

प्रस्तावना :-

21वीं सदी में मानव सभ्यता अभूतपूर्व आर्थिक परिवर्तन से गुजर रही है। तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण और औद्योगिकीकरण ने आर्थिक वृद्धि को तीव्र बनाया है। किन्तु यह वृद्धि कई बार पर्यावरणीय असंतुलन, संसाधनों के क्षरण और सामाजिक विषमता को जन्म देती है। ऐसे में प्रश्न उठता है- क्या विकास केवल आर्थिक संकेतकों से मापा जा सकता है, या उसे सततता के मानकों से भी जोड़ना आवश्यक है? संयुक्त राष्ट्र की 1987 की ब्रंटलैंड रिपोर्ट ने "सतत विकास" को परिभाषित करते हुए कहा- "वह विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं की क्षमता को क्षति नहीं पहुँचाता।" यह परिभाषा यह स्पष्ट करती है कि विकास का उद्देश्य केवल वृद्धि नहीं, यह संतुलित और दीर्घकालीन प्रगति होना चाहिए।

वर्तमान वैश्विक युग में विकास की परिभाषा केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं रही है, बल्कि इसमें सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय संतुलन और संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग भी शामिल हो गया है। सतत विकास का मूल उद्देश्य ऐसा विकास सुनिश्चित करना है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के हितों से समझौता न करे। दूसरी ओर, आर्थिक वृद्धि किसी देश की उत्पादन क्षमता, आय और रोजगार के विस्तार को दर्शाती है।

यह देखा गया है कि तीव्र आर्थिक वृद्धि के प्रयास में पर्यावरणीय और सामाजिक पहलुओं की उपेक्षा की जाती है, जिससे असमानता, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इसलिए आधुनिक युग में विकास का स्वरूप केवल मात्रात्मक वृद्धि नहीं, गुणात्मक सुधार की दिशा में भी होना चाहिए।

भारत जैसे विकासशील देश के लिए सतत विकास का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि यहाँ आर्थिक प्रगति के साथ-साथ गरीबी उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण, और सामाजिक समानता जैसी चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। सरकार द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा, स्वच्छ भारत मिशन, और सतत विकास लक्ष्यों के माध्यम से संतुलित विकास की दिशा में अनेक पहलें की जा रही हैं।

शोध के उद्देश्य :-

1. सतत विकास और आर्थिक वृद्धि की परिभाषा व उनके बीच संबंध का अध्ययन करना।
2. आर्थिक वृद्धि के पर्यावरणीय एवं सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. सतत विकास की दिशा में अंतरराष्ट्रीय प्रयासों को समझना।
4. भारत की आर्थिक नीतियों में सतत विकास की भूमिका का मूल्यांकन करना।
5. सतत आर्थिक वृद्धि के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि :-

यह अध्ययन भारत में सतत विकास और आर्थिक वृद्धि के पारस्परिक संबंध को समझने हेतु किया गया है। शोध प्रविधि का चयन इस प्रकार किया गया है कि विषय के सैद्धांतिक, तथ्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक सभी पक्षों का सम्यक् अध्ययन हो सके।

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें सतत विकास के विभिन्न आयामों (आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय) तथा आर्थिक वृद्धि के संकेतकों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

शोध में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग किया गया है।

- गुणात्मक दृष्टिकोण से नीतियों, योजनाओं एवं अवधारणाओं का अध्ययन।
- मात्रात्मक दृष्टिकोण से सांख्यिकीय आँकड़ों का विश्लेषण।

अध्ययन का क्षेत्र भारत है। इसमें राष्ट्रीय स्तर पर लागू सतत विकास नीतियों, योजनाओं तथा आर्थिक वृद्धि से संबंधित प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है।

शोध परिकल्पनाएँ :-

इस अध्ययन के अंतर्गत भारत में सतत विकास और आर्थिक वृद्धि के पारस्परिक संबंधों को समझने हेतु निम्नलिखित शोध परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं-

मुख्य परिकल्पना -

भारत में सतत विकास की नीतियाँ और रणनीतियाँ आर्थिक वृद्धि को दीर्घकाल में सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

उप-परिकल्पनाएँ -

1. नवीकरणीय ऊर्जा एवं हरित प्रौद्योगिकी में निवेश से भारत की आर्थिक वृद्धि दर में वृद्धि होती है।
2. पर्यावरण संरक्षण और औद्योगिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखने से सतत आर्थिक विकास संभव है।
3. सामाजिक समावेशन (शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार) में सुधार से आर्थिक वृद्धि अधिक स्थिर और समावेशी बनती है।
4. प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग से दीर्घकालीन आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित होती है।
5. शहरीकरण और अवसंरचना विकास यदि सतत सिद्धांतों पर आधारित हों, तो वे आर्थिक वृद्धि को प्रोत्साहित करते हैं।
6. जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु अपनाई गई नीतियाँ अल्पकाल में लागत बढ़ा सकती हैं, किंतु दीर्घकाल में आर्थिक लाभ प्रदान करती हैं।
7. भारत में सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति आर्थिक असमानताओं को कम करने में सहायक है।

शून्य परिकल्पनाएँ -

1. भारत में सतत विकास नीतियों का आर्थिक वृद्धि पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता।
2. पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन स्थापित करना व्यवहारिक नहीं है।

सैद्धांतिक आधार :-

आर्थिक वृद्धि - आर्थिक वृद्धि का अर्थ है किसी देश की उत्पादन क्षमता और राष्ट्रीय आय में दीर्घकालीन वृद्धि। यह GDP, निवेश दर, और रोजगार के आँकड़ों से मापी जाती है। क्लासिकल अर्थशास्त्रियों जैसे एडम स्मिथ और

डेविड रिकार्डो के अनुसार, पूंजी और श्रम की वृद्धि से अर्थव्यवस्था विकसित होती है।

सतत विकास - सतत विकास एक व्यापक अवधारणा है जिसमें तीन मुख्य स्तंभ शामिल हैं:

- आर्थिक सततता: संसाधनों का दक्ष उपयोग और उत्पादकता में वृद्धि।
- सामाजिक सततता: समान अवसर, गरीबी उन्मूलन, शिक्षा और स्वास्थ्य का विस्तार।
- पर्यावरणीय सततता: प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण।

सतत विकास इस बात पर बल देता है कि आर्थिक वृद्धि और पर्यावरणीय स्थिरता विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं।

आर्थिक वृद्धि और सतत विकास का संबंध :-

अतीत में यह माना जाता था कि आर्थिक वृद्धि के लिए पर्यावरणीय त्याग आवश्यक है। परंतु आधुनिक दृष्टिकोण यह कहता है कि दीर्घकालिक वृद्धि तभी संभव है जब पर्यावरण सुरक्षित हो। आर्थिक वृद्धि और सतत विकास का संबंध है -

1. सतत विकास आर्थिक वृद्धि को दीर्घकालिक बनाता है।
2. हरित अर्थव्यवस्था (Green Economy) रोजगार और उत्पादन दोनों बढ़ाती है।
3. संसाधनों के संतुलित उपयोग से आर्थिक प्रणाली स्थिर रहती है।

उदाहरण- नवीकरणीय ऊर्जा उद्योग GDP में योगदान देते हुए कार्बन उत्सर्जन को घटाता है।

अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य :-

1972 में स्टॉकहोम सम्मेलन ने पहली बार पर्यावरण और विकास को जोड़ने की पहल की।1992 के रियो अर्थ समिट में "एजेंडा 21" अपनाया गया, जिसमें सतत विकास की रूपरेखा दी गई।इसके बाद 2015 में संयुक्त राष्ट्र ने सतत विकास लक्ष्य (SDGs) जारी किए- 17 लक्ष्य और 169 उद्देश्यों के साथ। इन लक्ष्यों में गरीबी उन्मूलन, स्वच्छ ऊर्जा, जलवायु कार्यवाही, और असमानता में कमी जैसी बातें शामिल हैं।

भारत में आर्थिक वृद्धि और सतत विकास :-

भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद GDP वृद्धि दर लगातार 6-8% के बीच रही है। परंतु इसके साथ चुनौतियाँ भी रहीं हैं-

- वायु और जल प्रदूषण में वृद्धि
- भूमि और जल संसाधनों पर दबाव
- शहरीकरण से पारिस्थितिकी पर प्रभाव

इसीलिए भारत ने अपने विकास पथ को "सतत विकास" की दिशा में मोड़ा है।

भारत की राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (NAPCC, 2008)-

इस योजना के आठ मिशन हैं –

1. राष्ट्रीय सौर मिशन - भारत में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने हेतु इस मिशन की शुरुआत वर्ष 2010 में की गई। इसका मुख्य उद्देश्य स्वच्छ, सस्ती एवं टिकाऊ ऊर्जा उपलब्ध कराकर सतत विकास और आर्थिक वृद्धि को गति देना है।
2. राष्ट्रीय ऊर्जा दक्षता मिशन- भारत में ऊर्जा के कुशल उपयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राष्ट्रीय ऊर्जा दक्षता संवर्धन मिशन की शुरुआत की गई। यह सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
3. राष्ट्रीय जल मिशन - भारत में जल संसाधनों के संरक्षण, प्रबंधन और दक्ष उपयोग को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से इसकी शुरुआत की गई। यह मिशन सतत विकास की आधारशिला माना जाता है।
4. हरित भारत मिशन- भारत में वन क्षेत्र एवं हरित आवरण को बढ़ाने के उद्देश्य से हरित भारत मिशन की शुरुआत की गई। यह मिशन जलवायु परिवर्तन शमन एवं अनुकूलन-दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है और सतत विकास तथा आर्थिक वृद्धि को साथ-साथ आगे बढ़ाता है।
5. सतत विकास लक्ष्य (2015-2030) - भारत ने 17 सतत विकास लक्ष्यों को अपने राष्ट्रीय एजेंडे में

शामिल किया है। नीति आयोग प्रत्येक राज्य की प्रगति का मूल्यांकन “SDG इंडिया इंडेक्स” के माध्यम से करता है।

6. हरित ऊर्जा पहल - भारत ने 2030 तक 500 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य रखा है। सौर और पवन ऊर्जा में भारत विश्व के शीर्ष पाँच देशों में शामिल है।
7. स्वच्छ भारत अभियान - 2014 में शुरू हुई यह पहल सामाजिक सततता और सार्वजनिक स्वास्थ्य दोनों को बढ़ावा देती है।
8. ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम (2023) - व्यक्तियों और संस्थानों को पर्यावरणीय संरक्षण के लिए प्रोत्साहित करने की नई पहल।

आर्थिक वृद्धि में सतत विकास का योगदान –

सतत विकास का मूल उद्देश्य वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की क्षमता को सुरक्षित रखना है । भारत जैसे विकासशील देश में सतत विकास केवल पर्यावरण संरक्षण तक सीमित नहीं है, यह आर्थिक वृद्धि, सामाजिक समावेशन और संसाधन दक्षता का समन्वित मॉडल प्रस्तुत करता है।

1. रोजगार सृजन- हरित उद्योगों से नए रोजगार के अवसर बनते हैं।
2. ऊर्जा सुरक्षा- नवीकरणीय ऊर्जा से तेल पर निर्भरता घटती है।
3. पर्यावरण संरक्षण- प्रदूषण घटाने से स्वास्थ्य और उत्पादकता बढ़ती है।
4. विदेशी निवेश- हरित परियोजनाओं में निवेशक रुचि दिखाते हैं।
5. दीर्घकालिक वृद्धि- संसाधनों का संतुलित उपयोग आर्थिक प्रणाली को स्थिर बनाता है।

सतत विकास आर्थिक वृद्धि का विरोधी नहीं, बल्कि उसका आधार है। भारत में दीर्घकालीन, स्थिर और समावेशी आर्थिक प्रगति तभी संभव है जब विकास की प्रक्रिया पर्यावरणीय संरक्षण, सामाजिक न्याय और आर्थिक दक्षता के सिद्धांतों पर आधारित हो।

भारत की उपलब्धियाँ :-

भारत ने पिछले एक–डेढ़ दशक में सतत विकास और आर्थिक वृद्धि को साथ लेकर चलने की दिशा में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं-

1. नवीकरणीय ऊर्जा में उल्लेखनीय प्रगति - सौर और पवन ऊर्जा क्षमता में तीव्र विस्तार, स्वच्छ ऊर्जा से ऊर्जा सुरक्षा और कार्बन उत्सर्जन में कमी एवं हरित निवेश और रोजगार सृजन हुआ है। यह प्रगति राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना के लक्ष्यों के अनुरूप है।

2. ऊर्जा दक्षता में सुधार - LED कार्यक्रमों से बिजली खपत और लागत में कमी आई है। उद्योगों में ऊर्जा उत्पादकता बढ़ी है एवं आयातित ईंधन पर निर्भरता कम हुई है।

3. जल एवं स्वच्छता में सुधार- ग्रामीण क्षेत्रों में नल-जल कनेक्शन का तेज़ विस्तार हुआ है। खुले में शौच में कमी एवं स्वास्थ्य व्यय में गिरावट और श्रम उत्पादकता में सुधार हुआ है।

4. हरित आवरण और पर्यावरण संरक्षण- वनीकरण एवं वृक्षारोपण से हरित आवरण में वृद्धि हुई है। सामुदायिक वन प्रबंधन से ग्रामीण आजीविका सुदृढ़ हुआ है । जैव विविधता संरक्षण को बढ़ावा मिला है।

5. समावेशी सामाजिक विकास - शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण संकेतकों में सुधार हुआ है। डिजिटल सेवाओं से सामाजिक समावेशन गरीबी में कमी आई है, और मानव पूंजी का विकास हुआ है। ये उपलब्धियाँ सतत विकास लक्ष्य की दिशा में भारत की प्रगति को दर्शाती हैं।

6. डिजिटल और हरित अवसंरचना - डिजिटल भुगतान और ई-गवर्नेंस से पारदर्शिता, स्मार्ट शहरी सेवाएँ और सतत परिवहन एवं औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि हुआ है।

7. वैश्विक नेतृत्व और प्रतिबद्धताएँ- अंतरराष्ट्रीय जलवायु मंचों पर सक्रिय भूमिका एवं स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु अनुकूलन में वैश्विक साझेदारी बढ़ी है।

भारत की उपलब्धियाँ यह दर्शाती हैं कि सतत विकास और आर्थिक वृद्धि परस्पर पूरक हैं। नीतिगत सुधार,

तकनीकी नवाचार और सामाजिक समावेशन के माध्यम से भारत ने एक ऐसा विकास मॉडल प्रस्तुत किया है, जो दीर्घकालीन, समावेशी और पर्यावरण-अनुकूल है।

चुनौतियाँ :-

भारत ने सतत विकास की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी आर्थिक वृद्धि के साथ संतुलित, समावेशी और पर्यावरण-अनुकूल विकास प्राप्त करने में कई प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं-

1. जनसंख्या वृद्धि - 140 करोड़ से अधिक जनसंख्या संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डालती है।
2. प्रदूषण- दिल्ली, मुंबई, और पटना जैसे शहर विश्व के सबसे प्रदूषित शहरों में शामिल हैं।
3. जल संकट- भूजल स्तर में निरंतर गिरावट और वर्षा की असमानता जल प्रबंधन को कठिन बनाती है।
4. आर्थिक असमानता- आय और अवसरों में असमानता सतत सामाजिक विकास में बाधक है।
5. तकनीकी असमानता- हरित तकनीकें ग्रामीण और गरीब तबकों तक सीमित रूप से पहुँची हैं।

भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि तेज़ आर्थिक वृद्धि को बनाए रखते हुए पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय और संसाधन दक्षता सुनिश्चित की जाए। इसके लिए समन्वित नीतियाँ, तकनीकी नवाचार, स्थानीय भागीदारी और प्रभावी क्रियान्वयन अनिवार्य हैं।

नीति सुधार और समाधान :-

भारत में सतत विकास को तेज़ और प्रभावी बनाने के लिए नीतिगत सुधार, संस्थागत सुदृढ़ीकरण और तकनीकी–वित्तीय नवाचार आवश्यक हैं। प्रमुख सुधार और समाधान निम्नलिखित हैं-

1. परिपत्र अर्थव्यवस्था- पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण को बढ़ावा देना।
2. हरित कर नीति- प्रदूषकों पर कर और स्वच्छ उद्योगों को रियायतें।
3. ग्रीन फाइनेंस- पर्यावरण अनुकूल निवेश को प्रोत्साहन देना।
4. स्थानीय नवाचार - ग्रामीण क्षेत्रों में टिकाऊ तकनीकें विकसित करना।
5. जनजागरूकता अभियान- नागरिकों में सतत जीवनशैली की भावना जगाना।
6. ग्रीन GDP की गणना- पारंपरिक GDP में पर्यावरणीय लागत को जोड़ना।

नीति सुधारों का लक्ष्य केवल उत्सर्जन घटाना नहीं, बल्कि उत्पादकता बढ़ाना, जोखिम कम करना और अवसर सृजित करना है। समन्वित नीतियाँ, हरित वित्त, तकनीकी नवाचार और मजबूत शासन-इन चार स्तंभों पर भारत सतत विकास को आर्थिक वृद्धि का इंजन बना सकता है।

सतत विकास के सामाजिक आयाम :-

सतत विकास का सामाजिक आयाम यह सुनिश्चित करता है कि विकास की प्रक्रिया न्यायसंगत, समावेशी और मानव–केंद्रित हो। आर्थिक वृद्धि तभी टिकाऊ मानी जाती है जब उसका लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचे। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में सामाजिक आयामों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। सतत विकास केवल आर्थिक नहीं, सामाजिक समरसता का भी प्रतीक है। भारत में सामाजिक सततता के लिए आवश्यक है-

- शिक्षा और स्वास्थ्य पर अधिक निवेश
- लैंगिक समानता
- गरीबी उन्मूलन
- ग्रामीण विकास और स्थानीय उद्योगों का सशक्तिकरण

सतत विकास का सामाजिक आयाम यह स्पष्ट करता है कि विकास केवल आर्थिक संकेतकों तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव गरिमा, समान अवसर और सामाजिक न्याय पर आधारित होना चाहिए। भारत में दीर्घकालीन और स्थिर आर्थिक वृद्धि तभी संभव है जब सामाजिक विकास को नीति–निर्माण के केंद्र में रखा जाए।

तकनीकी नवाचार और सतत विकास :-

तकनीकी नवाचार सतत विकास का मुख्य चालक (Key Driver) है। यह सीमित संसाधनों के कुशल उपयोग, पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक–सामाजिक प्रगति के बीच संतुलन स्थापित करने में निर्णायक भूमिका निभाता है। भारत जैसे विकासशील देश में तकनीक सतत

विकास को व्यवहारिक, किफायती और समावेशी बनाती है।

- सौर ऊर्जा: भारत का सौर मिशन वैश्विक उदाहरण है।
- इलेक्ट्रिक वाहन नीति (FAME-II): परिवहन क्षेत्र में स्वच्छता की दिशा।
- डिजिटल गवर्नेंस: संसाधनों का पारदर्शी उपयोग।
- स्मार्ट सिटी मिशन: हरित अवसंरचना और ऊर्जा दक्षता का उदाहरण।

भारत में तकनीकी नवाचार को बढ़ावा राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना तथा वैश्विक स्तर पर सतत विकास लक्ष्य के अनुरूप दिया जा रहा है। तकनीकी नवाचार सतत विकास को सैद्धांतिक अवधारणा से व्यावहारिक समाधान में बदलता है। भारत में स्वच्छ ऊर्जा, स्मार्ट कृषि, डिजिटल शासन और हरित उद्योग के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि तकनीक, पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक वृद्धि-तीनों परस्पर पूरक हैं।

निष्कर्ष :-

आर्थिक वृद्धि और सतत विकास दो अलग धाराएँ नहीं हैं, ये एक-दूसरे के पूरक हैं। सतत विकास यह सुनिश्चित करता है कि आर्थिक प्रगति केवल आज के लिए नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी लाभकारी हो। भारत ने हरित ऊर्जा, स्वच्छ पर्यावरण, और सामाजिक समानता की दिशा में सराहनीय कदम उठाए हैं। फिर भी, जनसंख्या दबाव, प्रदूषण, और जल संकट जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इसलिए आवश्यक है कि विकास की परिभाषा GDP वृद्धि तक सीमित न रहे, बल्कि उसमें मानव कल्याण और पर्यावरण संरक्षण भी सम्मिलित हो। “विकास तभी वास्तविक है, जब वह सभी के लिए हो और सदा के लिए हो।”

संदर्भ सूची -

1. भारत सरकार. राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (NAPCC). पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली.
2. भारत सरकार. आर्थिक सर्वेक्षण (Economic Survey of India). वित्त मंत्रालय.
3. पंचवर्षीय योजनाएँ. योजना आयोग / नीति आयोग, नई दिल्ली.
4. नीति आयोग. भारत में सतत विकास लक्ष्य प्रगति रिपोर्ट.
5. संयुक्त राष्ट्र. Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development.
6. दत्त, रूद्र एवं सुंदरम, के.पी. भारतीय अर्थव्यवस्था, सुल्तान चंद एंड सन्स, नई दिल्ली.
7. मिश्रा, एस.के. एवं पुरी, वी.के. अर्थशास्त्र के सिद्धांत, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, मुंबई.
8. अग्रवाल, अनिल. पर्यावरण और विकास, सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट, नई दिल्ली.
9. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, Human Development Report.
10. भारत सरकार, नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) वार्षिक रिपोर्ट.
11. भारत सरकार, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्रालय. राष्ट्रीय जल नीति एवं रिपोर्टें.
12. अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी. Renewables & Energy Efficiency Reports.
13. शर्मा, आर.के. सतत विकास: अवधारणा एवं व्यवहार. रावत पब्लिकेशंस, जयपुर.
14. World Commission on Environment and Development (1987). Our Common Future (Brundtland Report).
15. NITI Aayog (2023). Sustainable Development Goals India Index.
16. Government of India. (2024). Economic Survey.
17. Ministry of Environment, Forest and Climate Change (2023). State of Environment Report.
18. United Nations (2015). Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development.
19. Kumar, A. (2021). Sustainable Growth and Green Economy in India. New Delhi: Sage Publications.
20. World Bank (2024). India’s Path to Sustainable Development.